डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 20.04.2021

पत्र : चतुर्थ / छायावादोत्तर हिन्दी काव्य / उड़ चल, हारिल
- अज्ञेय
(शेष...)

फिर कहते हैं : ऊपर - ऊपर - ऊपर - ऊपर
बढ़ा चीरता चल दिङ्मंडल :
अनथक पंखों की चोटों से
नभ में एक मचा दे हलचल :
तिनका? तेरे हाथों में है
अमर एक रचना का साधन—
तिनका? तेरे पंजे में है
विधना के प्राणों का स्पन्दन!

(शब्दार्थ :- ~~चीरता : ...~~ चीरता = भेदते हुए
दिङ्मंडल = दिशाओं का समूह, अनथक = बिना थके हुए,
~~चोटी : पहाड़ के सबसे ऊपरी भाग के~~
चोटों = प्रहारों से, नभ = आकाश, विधना = ब्रह्मा, विधाता,
स्पंदन = धड़कन, स्फुरण)

कवि हारिल पक्षी से कहते हैं कि तुम ऊपर और अधिक ऊपर अनंत आसमान में खूब ऊँची उड़ान भरो और सभी दिशाओं में को भेदते हुए आगे बढ़ो। अपने कभी न थकने वाले चोटों के प्रहार से आकाश में अपनी उपस्थिति से एक हलचल-सी मचा दो।

कवि हारिल के पंजों में दबे हुए तिनकों की विशेषता बतलाते हुए कहते हैं कि तुम्हारे पंजों में जो तिनका है, उसे मामूली मत समझो। वह सृष्टि (संसार) के सृजन का एक साधन है जो कभी नष्ट नहीं होगा। वह साधन अमर है। इसमें ~~...~~ सृष्टि ~~...~~ रचयिता ब्रह्मा के प्राण धड़कते हैं। इन पंक्तियों के द्वारा कवि देश के नवयुवकों को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि जीवन में ऊपर उठो

~~और तरफ अपने यश का परचम (लहरा) दो~~
सभी बाधाओं को पार कर आगे बढ़ो और सभी दिशाओं में अपनी यश कीर्ति फैला दो। अपने पुरुषार्थ से अपनी उपलब्धि दर्ज करवाओ इसके लिए तुम निरंतर प्रयास करते रहो कभी नहीं थको. न हार मानो।

कवि हरिश के पंजों में दबे हुए तिनकों के माध्यम से नवयुवकों को कहते हैं कि तुम्हारे हाथों में जो तिनका रूपी कर्म करने का जो साधन है उसे छोटा मत समझो अर्थात जो ही है उसी से तुम प्रयास करो आगे बढ़ो। उसे कम मत समझो। उससे तुम इस संसार की रचना कर सकते हो सिर्फ अपने मन में दृढ़ निश्चय कर लो, जो तुम्हारे पास है उसी से प्रयास करो उसमें विधाता (ब्रह्मा) का आशीर्वाद है अर्थात तुम कर्म के पथ पर आगे बढ़ो।

अर्थात तुम प्रगति पथ पर आगे बढ़ो और उसके निर्धारित सीमा को पार कर अपनी यश-कीर्ति फैलाओ। हम सभी जानते हैं कि तिनका-तिनका जोड़ कर ही घोसला का निर्माण होता है। बूंद-बूंद भर के तालाब भरता है। ठीक उसी प्रकार तुम अपने पास जो भी साधन है उससे जीवन के कर्म पथ पर आगे बढ़ो। विधाता तुम्हारे साथ है।